SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

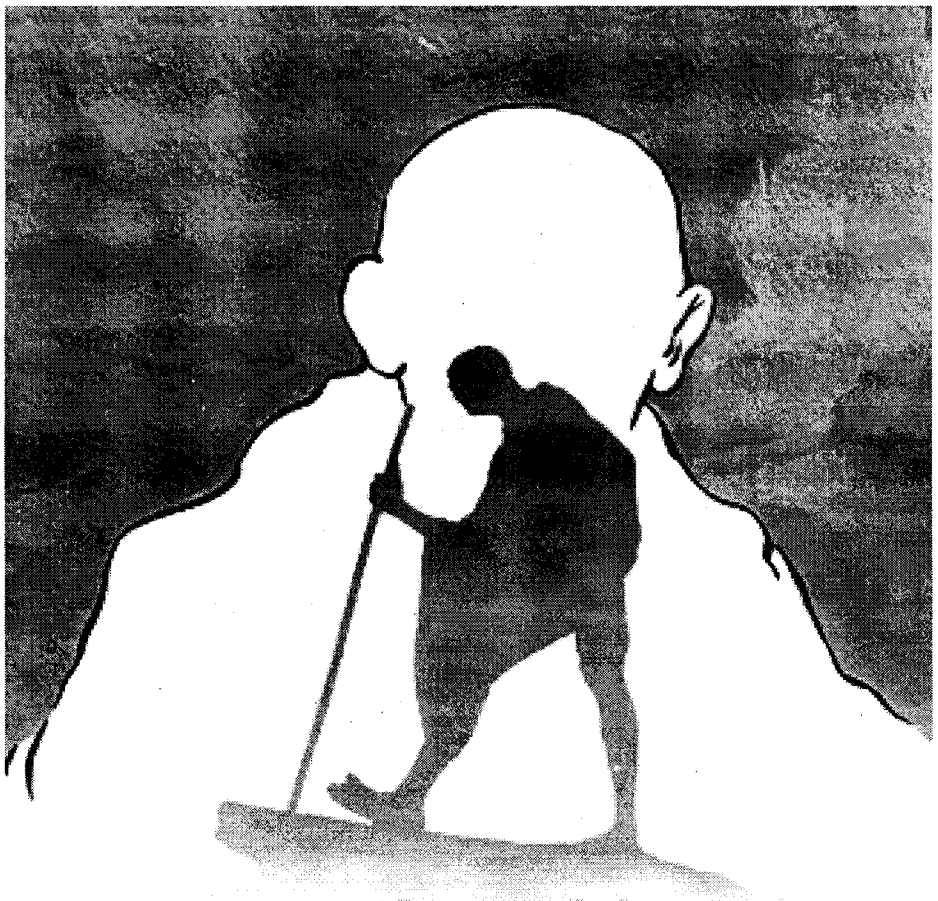

समसामयिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद

संपादक

डॉ.आलोक रंजन पांडेय

डॉ.संतोष सुभाषराव कुलकर्णी

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

समसामयिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद

संपादक
डॉ. आलोक रंजन पांडेय
(रामानुजन कॉलेज, नई दिल्ली)
डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी
(सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय, लातुर)

आई पब्लिकेशन्स,
लातूर (महाराष्ट्र)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

पुस्तक	:	समसामयिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद
संपादक	:	डॉ. आलोक रंजन पांडेय डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी
ISBN	:	978-81-952511-2-4
प्रकाशक	:	आई पब्लिकेशन्स, लातूर (महाराष्ट्र) माताजी नगर, रिंग रोड, लातुर।
संपर्क	:	9421362107, 9767755911 aaipublicationslatur@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम, 21 जून, 2021
शब्द संयोजन	:	संस्कृती कुलकर्णी, लातूर
मुखपृष्ठ	:	श्री शिवाजी हांडे
मूल्य	:	300/- (तिनसौ रूपये मात्र)
मुद्रण	:	आई पब्लिकेशन्स, लातूर।
©	:	विश्व हिंदी संगठन, नई दिल्ली

* "समसामयिक परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद" इस पुस्तक में व्यक्त मतों से संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

अनुक्रम

1. गाँधी दर्शन : एक सांस्कृतिक अध्ययन 12
बुद्धिराम
2. हिंदी कवियों पर गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं सिद्धांतों का प्रभाव 19
डॉ. पंढरीनाथ शिवदास पाटील
3. महात्मा गांधी : आज, कल और कल 27
डॉ. रोहिदास धोंडीबा गवारे
4. भारतीय सिनेमा और महात्मा गांधी 31
डॉ. आरती पाठक
5. महात्मा गांधी की शिक्षानीति 42
डॉ. गणपत माने
6. गॉधी की अहिंसा का निहितार्थ 50
डॉ. राधा भारद्वाज
7. म. गांधीजी के सत्य और अहिंसा संबंधी विचार 58
डॉ. विजय गणेशराव वाघ
8. गांधीजी : सत्य अहिंसा एवं सत्याग्रह 63
डॉ. जोशी विरेंद्र
9. गांधी जी - सत्य, अहिंसा, एवं सत्याग्रह, 70
डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा
10. संत लालदास के काव्य में शान्ति और अहिंसा का स्वरूप 76
डॉ. यशोदा मेहरा
11. गांधी के सिध्दांत सत्य-अहिंसा-धर्म के प्रयोग : एक मूल्यांकन 82
डॉ. संतोष कुमार अहिरवार
12. महात्मा गांधी की स्वाधीनता के लिए सत्य, अहिंसा सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, असहयोग की देन 89
प्रा. लेफ्टनंट ज्ञानेश्वर सोनेराव चिट्टमपल्ले

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

13. गाँधीजी हिन्दस्वराज-एक ऐतिहासिक अवलोकन 95
लालमोहन राम
14. गांधी का हिन्द स्वराज 102
स्मिता रजक
15. डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर के नाटकों में महात्मा गांधी का चिंतन 109
डॉ. पंडित बन्ने
16. महात्मा गांधी एक चिंतन 114
प्रा. सुनिता विठ्ठलराव भोसले
17. गांधी : नारी विचार 120
डॉ. दीपक पवार
18. स्त्री–चेतना और गाँधी 127
डॉ. सिन्धु सुमन
19. महात्मा गांधीजी का नारीवाद 135
प्रा. डॉ. सुनंदा विश्वनाथ भद्रशेटे
20. स्त्री सशक्तिकरण पर गांधी विचार 138
पोपट भावराव बिरारी
21. महिला संबंधी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार 145
प्रा. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
22. गांधी विचार और महिला सशक्तिकरण 151
प्रा. डॉ. चित्रा धामणे
23. **महात्मा गांधी और उनका समाज दर्शन** **158**
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
24. गांधी और उनका दर्शन 163
डॉ. अंजली कायस्था
25. मीरा के प्रगतिवादी विचारों से प्रेरित गांधीवादी दर्शन 171
डॉ. शिल्पा मेहता
26. गांधी और उनका समाज दर्शन 176
प्रा. डॉ. रेखा मुळे
27. महात्मा गांधी और उनका समाज दर्शन 181
प्रा. डॉ. राम दगडू खलंग्रे

SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

महात्मा गांधी और उनका समाज दर्शन

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभागाध्यक्ष,
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली
जिला हिंगोली। (महाराष्ट्र)

गांधीजी ने समाज के अंतिम व्यक्ति से अपना जीवन दर्शन प्रारंभ किया है। समाज का अंतिम व्यक्ति उसे कहा जाता है की, वह व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक रूप से जो निम्न कोटि का हो, जो व्यक्ति अंतिम व्यक्ति से उपर है। उसे उन्होंने दूसरा अंतिम व्यक्ति माना है। फिर क्रमशः अन्य अंतिम व्यक्तियों के उत्थान की बात की। उन्होने समाज के सबसे दीन हर एक प्रकार से हीन व्यक्ति के विकास को लक्ष्य बनाकर विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम प्रारंभ किए। उनका मत यह है कि यदि इस प्रकार का उत्थान होगा तब सारे समाज का उत्थान कहा जाएगा।

गांधीजी के सामाजिक विचार अहिंसात्मक मानवीय समाज की अवधारणा से ओतप्रोत है। उनके सामाजिक विचार आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करने वाले एवं भौतिकवाद के विरोधी है। गांधीजी कहते थे की भारत गाँव में रहता है। शहरों में नहीं। भौगोलिक रूप से उन्होंने शहर एवं गाँव दोनों के उत्थान की बात की, परंतु गाँव को प्राथमिकता दी। क्योंकि गाँव अपेक्षाकृत पिछडा है। इसिलिए उन्होंने ग्राम स्वराज्य और ग्रामोदय की विचारधारा सामने रखी। क्योंकि गाँव के उत्थान में समाज का उत्थान है और समाज के उत्थान का अर्थ है राष्ट्र का उत्थान। म. गांधी अपनी आत्मकथा में कहते है कि मैं हिन्दुस्तानी समाज की सेवा में ओतप्रोत हो गया उसका कारण आत्मदर्शन की मेरी अभिलाषा थी। ईश्वर की पहचान सेवा से ही होगी, यह मानकर मैंने सेवा-धर्म स्वीकार किया था। मैं हिन्दुस्तान की सेवा करता था, क्योंकि वह सेवा मुझे अनायास प्राप्त हुई थी।मुझे उसमे रूची थी।[1]

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

गांधीजी ग्रामसभ्यता को नष्ट नही होने देना चाहते थे। गांधीजी ने कहा की समाज में अमूल परिवर्तन कर देना क्रांति है। क्रांति का अर्थ व्यापक परिवर्तन से है। इस परिवर्तन में समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मानस, विचार और व्यवहार में परिवर्तन होगा। वास्तविकता तो यह है जब यह परिवर्तन होगा तभी सारे समाज में परिवर्तन होगा। क्रांति का आधार हिंसा नहीं, अहिंसा होगी। वे कहते है कि मेरा जीवन संपूर्ण अखंड और अविभाज्य है। और मेरे सब कार्य एक दूसरे में ओतप्रोत है। उन सब का जन्म संपूर्ण मानव जाति के प्रति रहे मेरे कभी न तृप्त होने वाले प्रेम से होता है।[2]

महात्मा गांधीजी ने सभी क्षेत्र में अपने अतुलनिय कार्य किए है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों मे उनके विचार बहुत महत्वपुर्ण माने जाते है। उनके सामाजिक विचारों के बारे मे निम्न प्रकार कि, कुछ बातें यहॉ पर स्पष्ट करना चाहता हूँ।

1) वर्ण व्यवस्था

वर्ण व्यवस्था एक समतलीय आधार को निरूपीत करती है। जिस पर ईश्वर की सभी सन्तानों को सर्वधा समान स्थान प्राप्त है। वर्ण धर्म की इस कल्पना में कोई मनुष्य किसी से उँचा नहीं है। सभी समान है और सन्माननीय है। लेकिन महात्मा गांधीजी वर्ण व्यवस्था बनाए रखने के समर्थक है और यह व्यवस्था जन्म से ही होनी चाहिए। ऐसा वह मानते थे। वर्ण व्यवस्था को वह वैज्ञानिक व्यवस्था मानते है। वंशानुक्रम का नियम एक शाश्वत नियम है। अपने पिताजी ने या वंश के लोगों ने जो कार्य किया था। वही कार्य हमे करने चाहिए ऐसा उनका मत था। ऐसा नही होने से अव्यवस्था फैल जायगी। इस तरह की उनकी धारणा थी। साथ ही उनका कहना था कि सामाजिक महत्व की दृष्टी से सभी काम समान होते और किसी कार्य को या उसे करनेवालों को छोटा नही समझना चाहिए। उनका मानना है कि, सफाई करने वाले का कार्य उतना ही महत्व का है जितना एक वैज्ञानिक के कार्य का हो सकता है। सामाजिक न्याय का तत्व होना चाहिए ऐसा वह मानते है। मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखना चाहिए।

2) अस्पृश्यता का अन्त

अस्पृश्यता धर्म का अंग न होकर समाज में प्रचलीत उँच-नीच की

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

भावना से उत्पन्न हुई है। भारतीय समाज को जो एक कलंक लगा हुआ है। उसे नष्ट करने का कार्य महात्मा गांधीजी ने किया है। उनका मानना था कि, अस्पृश्यता यह एक घातक रोग है, जो समस्त समाज का नाश कर देगा। महात्मा गांधीजी अछूत समाज को राजनितीक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों मे समान अधिकार देने के पक्ष में थे। अछुतो को मन्दिर में प्रवेश होना चाहिए और पूजा आराधना का अधिकार होना चाहिए। इससे अछूतों में आत्मसन्मान की भावना जागृत होगी और उनके प्रति सवर्ण हिन्दुओं का दृष्टीकोण बदल जायेगा। आंतरजातिय विवाह को भी गांधीजी ने मान्यता दी थी। अछूत लोग भगवान के पुत्र अर्थात हरीजन की उपमा महात्मा गांधीजीने अछूतो को दी थी। राष्ट्र के उत्थान के लिए अस्पृश्यता का निर्मुलन अनिवार्य है। अस्पृश्यता का भेद मिटाना चाहिए क्योंकि सभी मानव एक ही ईश्वर की संतान है।

3) बुनियादी शिक्षा

गांधीजी की दृष्टी से शिक्षा मतलब शरीर, मस्तिष्क् और आत्मा का सम्मीलित विकास है। उस समय अपने देश में अंग्रेजो ने जो शिक्षा व्यवस्था प्रस्थापित की थी वह केवल बाबु (क्लार्क) लोग निर्माण कर सकते थे। ऐसा वह कहते है। अर्थात अंग्रेजो की शिक्षा नीति बहुत ही दोष पूर्ण है ऐसा उनका मानना था। शिक्षा व्यवस्था युवको का शारीरिक, बौध्दिक या आत्मिक विकास किसी भी प्रकार का विकास में असमर्थ है। ऐसा वह मानते थे।

शिक्षा प्रणाली के बारे में उनका एक सुझाव था कि, जिसे बुनियादी शिक्षा के नाम जाना जाता है। उसमें निम्न प्रकार की बातो पर ध्यान दिया है।

1. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
2. शिक्षा स्वावलंबी हो अर्थात विद्यार्थी के जीवन मे उस शिक्षा का उपयोग अपने भरण-पोषण के लिए हो सके।
3. शिक्षा के अंतर्गत कोई ना कोई कौशल्य उसे सिखाया जाना चाहिए। सभी विषयों मे ऐसी दस्तकारी होनी चाहीए। इससे केवल बाबू लोग न निर्माण हो बल्कि खुद कुछ कर सके।
4. शिक्षा और स्वास्थ्य

   गांधीजी ने बताया की ज्ञान प्राप्ति का सबको अवसर प्राप्त होगा और

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

बस अपनी शक्ति के अनुसार बौद्धिक शक्ति का विकास कर सकेंगे। विज्ञान का आदर होगा लेकिन विज्ञान का प्रयोग जन-सामान्य के हित में किया जाएगा। प्रत्येक मनुष्य को जिविका चलाने के लिए विज्ञान का लाभ मिलना चाहिए। अपने घर-गाँव के वातावरण में ही उसे शिक्षा देने की प्रकिया सतत जारी रखनी चाहिए। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सभी को प्राप्त हो। विशेषकर प्राकृतिक चिकित्सा भी प्रधानता हो। संतुलित आहार, रसोई घर, व्यक्तिगत व सामाजिक सफाई, वस्त्र, मकान आदि सबको सुलभ हो। इससे समाज और राष्ट्र का उत्थान होगा।

5) स्त्री सुधार

महात्मा गांधाजी ने स्त्री सुधार के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनका कहना था कि, स्त्रियॉ भी पूरषों के बराबर शक्तिमान होती है। उसे कमजोर नही समझना चाहिए। ऐसा करना उनका अपमान है उनका कथन है कि, सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता और नैतिकता आदि तत्वों पर विचार करने से स्त्री-पुरूषो से भी श्रेष्ठ है। गांधीजीने पर्दा प्रथा, बालविवाह, देवदासी प्रथा आदि कुरीतियों का विरोध करने का कार्य किया है।

6) समाज परिवर्तन की प्रक्रिया

गांधीजी ग्रामसभ्यता को नष्ट नही होने देना चाहते थे। गांधीजी ने कहा की समाज में अमूल परिवर्तन कर देना क्रांति है। क्रांति का अर्थ व्यापक परिवर्तन से है। इस परिवर्तन में समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मानस, विचार और व्यवहार में परिवर्तन होगा। वास्तविकता तो यह है जब यह परिवर्तन होगा तभी सारे समाज में परिवर्तन होगा। क्रांति का आधार हिंसा नहीं, अहिंसा होगी। आर्थिक, सामाजिक संबंध, उँच-निच, छोट-बड़े, मालिक-मजदूर, मॅनेजर मजदूर के न होकर केवल एकसमान मानव संबंध होंगे।

7) सांप्रदायिक एकता

गांधीजी भारत के सभी संप्रदाय हिंन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई और पारसी इन सभी सम्प्रदाय को एक सुत्र में लाने का कार्य उन्होने हि किया है। विशेषकर हिन्दु-मुस्लिम एकता पर उन्होने ज्यादा जोर दिया था। वह मि. जिना के देश विभाजन के विचारों से कभी सहमत नही हुए। उनका मानना था कि, धर्म को राष्ट्रीयता का आधार नही माना जा सकता। उन्होंने

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

अन्त तक भारत पाकिस्तान विभाजन का विरोध किया। लेकिन जब भारत विभाजन हो ही गया तो हिन्दु-मुस्लिम धार्मिक दंगो को रोकने का कार्य उन्होंने किया था।

अंततः कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी समाज के संगठन और सुनियोजित विकास के लिए मुख्य आधार मनुष्य को मानते है।

संदर्भ :

1. म. गांधी, सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदीर, अहमदाबाद-14 संस्करण 1961 पृ.137
2. बोस निर्मलकुमार, सिलेक्शन फ्रॉम गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदीर, अहमदाबाद-14 संस्करण 1948 पृ. 45

■ ■ ■

PRINCIPAL
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)